विद्याभवन बालिका विद्यापीठ लखीसराय

कक्षा – अष्टम **दिनांक -15 - 11 - 2021**

विषय -हिन्दी **विषय शिक्षक - पंकज कुमार**

सुप्रभात् बच्चों आज वाच्य के बारे में अध्ययन करेंगे।

वाच्य किसे कहते हैं हिंदी में-

वाक्य में क्रिया के जिस रुप से कर्ता, कर्म, औऱ भाव की प्रधानता का पता चलता हो, उसे वाच्य कहते हैं।

वाच्य का शाब्दिक अर्थ- कहना या बोलना।

वाच्य के भेद/प्रकार –

वाच्य तीन प्रकार के होते हैं

1. **कर्तृवाच्य**
2. **कर्मवाच्य**
3. **भाववाच्य**

कर्तृवाच्य-

- **वाक्य में यदि क्रिया का स्वरूप कर्ता के लिंग, वचन और पुरुष के अनुसार है, तो कर्तृवाच्य कहा जाता है।**
- **कर्तृवाच्य के वाक्य में कर्ता की प्रधानता होती है।**
- **कर्तृवाच्य में सकर्मक और अकर्मक दोनों क्रियाओं का प्रयोग होता है ।**
- **कर्तृवाच्य में कर्ता के साथ किसी भी कारक चिन्ह या परसर्ग का प्रयोग नहीं होता है।**

कर्तृवाच्य के उदाहरण-

- **आयुष क्रिकेट खेलता है ।**

इस वाक्य में क्रिया (खेलना), कर्ता (आयुष) के अनुसार है, तथा वाक्य में कर्ता के साथ किसी भी कारक चिन्ह का प्रयोग नहीं हुआ है, इसलिए यह कर्तृवाच्य होगा।

- **सीता गीत गाती है ।**

इस वाक्य में क्रिया (गाना), कर्ता (सीता) के अनुसार है तथा वाक्य में कर्ता के साथ किसी भी कारक चिन्ह का प्रयोग नहीं हुआ है, इसीलिए यह भी कर्तृवाच्य है।